International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 15-09-2025, Accepted: 15-10-2025, Published: 30-10-2025
Volume 11, Issue 4, 2025, Page No. 55-57

डॉ. विजय कुमार संदेश के काव्य में प्रकृति–चित्रण

डॉ. संतोष गायकवाड
हिन्दी विभाग, उपप्रचार्य एवं सहयोगी प्राध्यापक, सोनुभाऊ बसवंत महाविद्यालय, शहापुर, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई, महाराष्ट्, भारत

सारांश
डॉ. संदेश का प्रकृति के साथ गहरा करुणामय संबंध है – वे उसे केवल देखते ही नहीं, जीते भी हैं। प्रकृति को गहराई से अनुभव करते हैं और उसे मानवीय चेतना से जोड़ते हैं। उनकी कविताओं में प्रकृति और मानवीय भावनाएँ एक–दूसरे में विलीन हो जाती हैं। यह संवेदनशीलता कवि की आंतरिक करुणा और आत्मीयता की अभिव्यक्ति है। कवि की आंतरिक संवेदनशीलता प्रकृति में प्रवाहित होती है। उनके लिए, प्रकृति एक ऐसा माध्यम है जो मानवता के आंतरिक दुःख, प्रेम, अकेलेपन और संघर्ष को शांत करती है। डॉ. संदेश की कविताओं में प्रकृति के प्रति न केवल भावनात्मक, बल्कि नैतिक और सामाजिक संवेदनशीलता भी झलकती है। बढ़ते प्राकृतिक विनाश, प्रदूषण और मानवीय स्वार्थ के इस दौर में, उनका काव्य हृदय व्यथित है। वे प्रकृति को एक माँ या एक सहजीवी के रूप में देखते हैं जिसे सम्मान और संरक्षण की आवश्यकता है। उनकी संवेदनशीलता इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि वे प्रकृति को केवल सौंदर्य ही नहीं, बल्कि जीवन का आधार भी मानते हैं।

मूल शब्दः प्रकृति, मानव, पर्यावरण, वसंत, पुष्प, भावात्मकता, संवेदनशीलता, पृथ्वी, आदि।

प्रस्तावना

मनुष्य का प्रकृति के साथ अनादि काल से ही सम्बन्ध रहा है। प्रकृति के साथ उसका सम्बन्ध उसके इस संसार में आगमन के समय से ही स्थापित हो गया था। अतः मनुष्य का प्रकृति से प्रेम होना कोई असामान्य बात नहीं है; प्रकृति के प्रति उसका प्रेम उसके अस्तित्व में ही निहित है। साहित्य भी मानव हृदय की भावनाओं को अभिव्यक्त करता है। अतः प्रकृति का चित्रण सभी देशों और भाषाओं के साहित्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत प्रकृति की एक सुन्दर क्रीड़ास्थली है। यमुना नदी के तट पर बसे उपवन, मादक वसन्त ऋतु की हवा और मखमली पर्वतों के दृश्य अन्यत्र दुर्लभ हैं। अतः भारतीय कवियों का प्रकृति के प्रति विशेष प्रेम होना स्वाभाविक है। भारतीय साहित्य में अनादि काल से ही प्रकृति चित्रण का विशेष स्थान रहा है। संस्कृत कवियों द्वारा चित्रित प्रकृति के सुन्दर चित्रों की तुलना इस साहित्य में अतुलनीय रूप से की जा सकती है। संस्कृत विद्वानों ने भी महाकाव्य काव्य के लिए प्रकृति के विभिन्न दृश्यों के वर्णन को आवश्यक माना है। प्रकृति चित्रण की संस्कृत परंपरा पाली, प्राकृत और अपभ्रंश में भी जारी रही।

हिंदी साहित्य जगत में कवियों की प्रकृति–विषयक रचनाएँ पाठकों को सदैव आकर्षित करती रही हैं। कवियों के लिए प्रकृति कभी सौन्दर्य का दर्शन, कभी कल्पना का अनूठा संसार, कभी अनुभव का सागर, कभी प्रेरणा, कभी सखी तो कभी सहचरी होती है। इसीलिए अधिकांश कवियों ने अपने काव्य में प्रकृति का सुन्दर वर्णन किया है। आधुनिक युग का भारतेंदु युग अनेक परिवर्तनों का काल था और इसीलिए इस युग में प्रकृति चित्रण में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। रीति काव्य की पारंपरिक शैलियों की सीमाओं को तोड़ते हुए कवियों ने प्रकृति का मुक्त रूप से वर्णन किया। श्रीधर पाठक की 'कश्मीर सुषमा' इसका एक प्रमुख उदाहरण है। गौरतलब है कि विद्यापति की रचनाओं में श्रृंगार रस की प्रधानता होते हुए भी बारहमासा और षटऋतु का अद्भुत सुंदर चित्रण मिलता है। हालाँकि, मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही', श्याम नारायण पांडे, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔंध', जयशंकर प्रसाद, महाप्राण 'निराला' और सुमित्रानंदन पंत सहित बाद के कवियों ने अपनी रचनाओं में प्रकृति को प्रमुखता से दर्शाया।

प्रकृति के प्रति लगाव आधुनिक कवियों में भी कम नहीं है। डॉ. विजय कुमार संदेश समकालीन हिन्दी काव्य जगत के ऐसे कवि हैं, जिनके लेखन में प्रकृति केवल सौंदर्य का माध्यम नहीं, बल्कि जीवन का अनुभव–क्षेत्र बनकर उभरती है। वे गौतम बुद्ध के विचारों और आदर्शों से प्रभावित रहे है। इसका प्रभाव उनकी कई कविताओं में देखा जा सकता है। इस संदर्भ में वे लिखते है दृ "अपने निजी जीवन में मैं बुद्ध और उनके आदर्शों– विचारों से सदा प्रभावित रहा । कई कविताओं में उनका प्रभाव देखा जा सकता है, जिसमें अंधेरे को चीरकर उजाले की ओर जाने की प्रेरणा के साथ मानव मूल्यों को शब्द देने का भरपूर प्रयास है।"[1] बुद्ध के विचारों की विरासत उन्हें अपने माँ और पिताजी से मिली है– "मेरे माँ–बाबूजी भगवान बुद्ध के विचारों से सर्वाधिक प्रभावित थे। ताउम्र वे बुद्ध के विचारों– सिद्धांतों पर ही चले और दूसरों को भी उनके द्वारा बताए गए मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते रहे।"[2]

डॉ. विजय कुमार संदेश को कविता से शुरू से ही लगाव रहा है। अपने अध्यापकीय जीवन में उनका कविता से सीधा संबंध रहा है । वे कविता को जीवन को मंगलमय और परिष्कृत करने का साधन मानते हैं । उन्हीं के शब्दों में– "मैंने अनुभव किया है कि, कविताएँ जीवन को मंगलमय बनाने व जीवन को परिष्कृत करने का महत्वपूर्ण साधन होती है।"[3] प्रकृति से डॉ. संदेश को गहरा लगाव रझा है। उनकी कविताओं में प्रकृति एक जीवंत तत्व है – मानवीय भावनाओं, संवेदनाओं और चेतना से गहराई से जुड़ी हुई। उनके प्रकृति वर्णन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताएँ दृश्यात्मकता और संवेदनशीलता हैं। ये दोनों तत्व मिलकर एक सशक्त काव्यभाषा का निर्माण करते हैं जिसमें पाठक प्रकृति को न केवल देखता है, बल्कि उसका अनुभव भी करता है। कविता में दृश्यात्मकता शब्द–चित्रों का प्रयोग है जो सजीव दृश्यों को जीवंत कर देते हैं। डॉ. संदेश की कविताओं में यह दृश्यात्मकता अत्यंत प्रबल है। उनके द्वारा प्रयुक्त बिम्ब और प्रतीक इतने सजीव हैं कि पाठक को ऐसा लगता है जैसे वह प्रकृति के बीच मौजूद है। हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और कश्मीर की अपनी यात्राओं के दौरान, उन्होंने प्रकृति के मनमोहक सौंदर्य के दर्शन किए। उनकी कविताओं में पेड़, पत्ते, झरने, आकाश, हवा, वर्षा, बादल, पहाड़ आदि तत्व केवल वर्णन की वस्तुएँ नहीं, बल्कि अनुभव के विषय हैं। कवि द्वारा हिमालय की विशालता और

उसकी पावन चोटियों का वर्णन पाठक को हिमालय से रूबरू कराता है–

"हे उत्तुंग शिखर
तू श्वेत–शुभ्र–धवल हिम से आच्छन्न
तू गौरव–गाथा, तू उत्तुंग शृंग
महौषधियों, अनंत जलराशि का तू प्रथम स्रोत
तू पर्वतराज, तू आदि सभ्यता का पुरातन पुरुष
नहीं है तू शिलाओं का समूह–मात्र"[4]

इस प्रकार के चित्रण में प्रकृति का दृश्य केवल बाहरी नहीं रहता; वह आत्मानुभव का दृश्य बन जाता है।
डॉ. संदेश की कविताओं में सूक्ष्म निरीक्षण की क्षमता दिखाई देती है। वे सूक्ष्मतम तत्वों को इतनी बारीकी से पकड़ते हैं कि प्रकृति का हर पहलू जीवंत हो उठता है – पत्तों की सरसराहट, नदी की मधुर ध्वनि, मिट्टी की सुगंध, पक्षियों का कलरव – ये सब मिलकर एक समग्र परिदृश्य का निर्माण करते हैं। उनकी दृष्टि केवल बाह्य जगत तक ही सीमित नहीं है, बल्कि सूक्ष्मतम स्तर तक पहुँचती है। कवि ने प्रकृति के मनमोहक श्रृंगार– फूलों की कोमलता, सौंदर्य, आकर्षण और अपार औषधीय गुणों को करीब से देखा है। 'पुष्प: प्रकृति का श्रृंगार' कविता में कवि हमें जीवन के हर पहलू में छिपी सुंदरता और सकारात्मकता को खोजने के लिए प्रेरित करता है– चाहे वह सुखद हो या कठिन, साधारण हो या भव्य। जिस जीवन में यह 'फूल' मौजूद है, वह किसी मधुर धुन की तरह गतिशील और आनंदमय होगा–

"तृण में पुष्प, पादप में पुष्प
द्रुमों में पुष्प, झाड़ों में पुष्प
काँटों में पुष्प, पेड़ों में पुष्प
हास में पुष्प, विलास में पुष्प
पुष्प है तो जीवन में संगीत है।"[5]

मौसम की पहली बारिश सिर्फ़ ऋतु परिवर्तन का उत्सव नहीं है, बल्कि प्रकृति से फिर से जुड़ने का एक ज़रिया है। यह हमें प्रकृति के सान्निध्य में लौटने का निमंत्रण देती है। यह हमें सिखाती है कि जीवन की कठिनाइयों के बाद, आनंद और सौंदर्य अवश्यंभावी रूप से आते हैं। यह एक मधुर स्मृति बन जाती है, जो हमारे हृदय को आनंदित करती है। वास्तव में, मौसम की यह पहली बारिश प्रकृति की ओर से मानवता के लिए एक अनमोल उपहार है। बारिश की पहली फुहार का दृश्य एक सजीव कविता जैसा होता है। बूंदें जब तपती हुई धरती पर गिरती हैं, तो एक तेज सनसनाहट की आवाज़ के साथ वाष्प बनकर उड़ जाती हैं। फिर धीरे–धीरे वे बूंदें जमीन को भिगोने लगती हैं, और मिट्टी की सोंधी खुशबू हवा में घुल जाती है। पत्तों पर जमी धूल साफ़ हो जाती है और वे चमक उठते हैं। आकाश में बिजली की चमक और बादलों की गर्जना इस अनुभव को और भी रोमांचक बना देती है।'पहली फुहार' कविता में प्रकृति का यह दृश्य देखते ही बनता है–

"बारिश की पहली फुहार
जैसे धरती पर नवजीवन का संचार ।
हरित पृथ्वी, कोने से झाँकती किरण
जैसे, वर्षा–बूँदों का आलिंगन ।
मोती और सीप, प्रकृति का प्रेमोत्सव है ।
हर बूँद सृजन का प्रतीक, धरती का उत्सव है ।"[6]

पृथ्वी हमारी माता है और हम उसकी संतान हैं। यह कथन सृष्टि के आरंभ से ही मानव और प्रकृति के बीच विद्यमान गहन, आत्मीय और सहजीवी संबंध को दर्शाता है। मानव जीवन की प्रत्येक धड़कन, प्रत्येक श्वास और प्रत्येक आवश्यकता प्रकृति और पर्यावरण पर निर्भर है। यह संबंध लेन–देन का नहीं, बल्कि विश्वास, कृतज्ञता और सद्भाव का है। मानव और प्रकृति के बीच का संबंध सहजीवन का एक प्रमुख उदाहरण है। प्रकृति हमें जीवनदायी वायु, स्वच्छ जल, पौष्टिक भोजन और आश्रय के लिए सामग्री प्रदान करती है। बदले में, मानव का यह कर्तव्य है कि वह इस संतुलन को बनाए रखे, पेड़ लगाए, नदियों को स्वच्छ रखे और प्रकृति का सम्मान करें। प्राचीन काल में मानव ने इस संबंध को गहराई से समझा था। इसी कारण पेड़, नदियाँ, पहाड़ और जानवर दिव्य माने जाते थे, जो इस सम्मानजनक दृष्टिकोण का प्रतिबिंब है।
विकास की अंधी दौड़ और उपभोक्तावादी संस्कृति ने प्रकृति और मनुष्य के मूलभूत रिश्ते को भुला दिया है। हमने प्रकृति को एक 'संसाधन' समझकर उसका अंतहीन दोहन किया है। वनों की कटाई, कारखानों को प्रदूषित करना, नदियों को ज़हरीला बनाना और धरती पर प्लास्टिक कचरा फेंकना – ये सब उस माँ के प्रति कृतघ्नता के कार्य हैं जिसने हमें पाला है। परिणामस्वरूप, हम जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग, असमय बाढ़ और सूखे तथा नई बीमारियों के रूप में पीड़ित हैं। प्रकृति का प्रकोप हमें यह एहसास दिला रहा है कि हम उससे अलग नहीं, बल्कि उसका एक अंग हैं। आज इस विस्मृत रिश्ते को याद करने की ज़रूरत है। हमें विकास का ऐसा मार्ग चुनना होगा जो शोषण पर नहीं, बल्कि प्रकृति के साथ सहयोग पर आधारित हो। हम जल संरक्षण, वृक्षारोपण, नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग और एक स्थायी जीवन शैली अपनाकर इस रिश्ते को मज़बूत कर सकते हैं। क्योंकि प्रकृति स्वस्थ रहेगी, तो मानव संस्कृति भी समृद्ध होगी। डॉ. संदेश की कविताओं में प्रकृति के प्रति न केवल भावनात्मक, बल्कि नैतिक और सामाजिक संवेदनशीलता भी झलकती है। बढ़ते प्राकृतिक विनाश, प्रदूषण और मानवीय स्वार्थ के इस दौर में, उनका काव्य हृदय व्यथित है। वे प्रकृति को एक 'माँ' या एक 'सहजीवी प्राणी' के रूप में देखते हैं जिसे सम्मान और संरक्षण की आवश्यकता है। उनकी संवेदनशीलता इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि वे प्रकृति को केवल सौंदर्य ही नहीं, बल्कि जीवन का आधार भी मानते हैं। पर्यावरण के विनाश को वे 'मानव, प्रकृति और पर्यावरण' कविता के माध्यम से इस प्रकार व्यक्त करते हैं–

"किन्तु, मानव, प्रकृति और पर्यावरण
के अंत: सम्बन्धों के क्षरण से
मनुष्य और प्रकृति के बीच
भूकंप, बाढ़, सूखा, प्रदूषण और महामारी
जैसी आपदायें आकार,
जड़–चेतन के अस्तित्व पर
आड़ी–तिरछी रेखाएँ खड़ी करती रही है ।"[7]

डॉ. संदेश की 'वसंत आ गया है' कविता में वसंत ऋतु का मनोहारी चित्र प्रस्तुत हुआ है । शीत ऋतु की कठोरता और नीरसता के बाद,बसंत ऋतु का आगमन होता है, तो वह सम्पूर्ण सृष्टि को एक नए उत्साह और उल्लास से भर देता है। प्रकृति बसंत के आगमन से मानो सज–धज कर तैयार हो जाती है। पतझड़ में नंगे पड़े पेड़–पौधों में नई कोपलें फूटने लगती हैं। हर तरफ हरियाली फैल जाती है। आम के पेड़ों पर बौर आ जाते हैं और उनकी खुशबू पूरे वातावरण में छा जाती है। गुलमोहर, सेमल और पलाश जैसे फूलों के रंग प्रकृति के कैनवास पर बिखर जाते हैं। ऐसा लगता है मानो धरती ने रंग–बिरंगे पर्दे ओढ़ लिए हों। बसंत ऋतु पक्षियों के लिए भी विशेष आनंद लेकर आती है। बसंत ऋतु के सबसे प्रतिष्ठित प्रतीक कोयल की मधुर

आवाज सुनाई देती है। भौंरों को गुनगुनाते और फूलों से रस पीते देखा जा सकता है। पक्षियों का चहचहाना इस मौसम के मधुर संगीत में चार चाँद लगा देता है। बसंत ऋतु का आगमन न केवल ऋतु परिवर्तन का अग्रदूत है, बल्कि नए जीवन, नई ऊर्जा और नई आशा का भी अग्रदूत है। बसंत ऋतु की मिठास हमें प्रकृति के करीब लाती है और जीवन को एक उत्सव की तरह जीना सिखाती है। वसंत के आगमन के दृश्य को निम्न पंक्तियों में देखा जा सकता है–

"अहले प्रात: कोयल की कुहू–कुहू से
भारों के मधुर गुंजन से
बौराये आम्र–मंजरियों से जब मकरंद झरे
नीम–करंज से जब तिक्त–मधुर बयार बहे
चटख लालिमा ले जब पलाश खिले
महुआ के फूलों से जब टप–टप रसधार झरे
प्रतीति होने लगी है–
मदमस्त, वसंत अब आ गया है ।"[८]

डॉ. संदेश का प्रकृति के साथ गहरा करुणामय संबंध है – वे उसे केवल देखते ही नहीं, जीते भी हैं। प्रकृति को गहराई से अनुभव करते हैं और उसे मानवीय चेतना से जोड़ते हैं। उनकी कविताओं में प्रकृति और मानवीय भावनाएँ एक–दूसरे में विलीन हो जाती हैं। यह संवेदनशीलता कवि की आंतरिक करुणा और आत्मीयता की अभिव्यक्ति है। कवि की आंतरिक संवेदनशीलता प्रकृति में प्रवाहित होती है। उनके लिए, प्रकृति एक ऐसा माध्यम है जो मानवता के आंतरिक दुःख, प्रेम, अकेलेपन और संघर्ष को शांत करती है।

निष्कर्ष

डॉ. विजय कुमार संदेश की कविताओं में प्रकृति चित्रण में दृ श्यात्मकता और संवेदनशीलता, दोनों ही उनकी रचनात्मकता की आत्मा हैं। वे प्रकृति को केवल देखते ही नहीं, बल्कि उसका अनुभव भी करते हैं और उसे पाठक तक पहुँचाते भी हैं। उनका प्रकृति–वर्णन केवल सौंदर्य की अभिव्यक्ति के लिए नहीं, बल्कि मानव और प्रकृति के बीच के गहरे संबंध को उजागर करने के लिए है। डॉ. संदेश के प्रकृति चित्रण में दृश्यात्मकता और संवेदनशीलता का अद्‌भुत संतुलन उन्हें समकालीन हिंदी कवियों में अग्रणी स्थान पर रखता है। उनकी कविताओं के माध्यम से पाठक को यह अनुभूति होती है कि प्रकृति केवल बाहर ही नहीं, हमारे भीतर भी निवास करती है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. विजय कुमार 'संदेश', उजाले की ओर, स्वाक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण: २०२१, पृ. ८
2. वही, पृ. ८
3. ही, पृ. ८
4. वही, पृ. २१
5. वही, पृ. ४२
6. वही, पृ. ४८
7. वही, पृ. ५३
8. वही, पृ. ५६